ISSN 0974-8857

TULSĪ PRAJÑĀ

(A UGC-CARE Listed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year : 49 • Vol. 193 • Issue : Jan-March, 2022

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
A University dedicated to Oriental Studies & Human Values
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

Editorial and Advisory Board

Padma Shri Dr. Kumarpal Desai
Professor Emeritus, Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun,
Managing Trustee, Institute of Jainology (India),
Managing Trustee, Gujarat Encyclopedia Trust (Ahmedabad)

Prof. M.R. Gelra
Founder Vice-Chancellor and Emeritus Professor
Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun-341306, Rajasthan

Prof. Naresh Dadhich
Former Vice Chancellor
Vardhaman Mahaveer Open University,
Kota, Rajasthan

Prof. Dayanand Bhargava
Emeritus Professor, JVBI, Ladnun
Former Chairman, Veda-Vijnana,
J.R. Rajasthan Sanskrit Univesity, Jaipur

Prof. Jitendra B. Shah
Founder & Pioneer Trustee, Shrut Ratnakar,
Former Director. L.D. Institute of Indology, Ahmedabad

Prof. S.R. Vyas
Former HOD, Dept. of Philosophy, MLSU, Udaipur
Former Member Secretary, ICPR, HRD Ministry, GOI, New Delhi

Prof. R.S. Yadav
Former Dean, Faculty of Social Sciences
Kurukshetra University,
Kurukshetra, Haryana

ISSN 0974-8857

Tulsī Prajñā

(A UGC-CARE Listed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year : 49 **Vol. 193** **Issue : Jan-March, 2022**

Patron

Prof. Bachhraj Dugar
Vice-Chancellor

Editors

Prof. Damodar Shastri
Prof. Nalin K. Shastree

Managing Editor

Mohan Siyol

Publisher

Jain Vishva Bharati Institute
Ladnun - 341306 (Raj.) India

Contact us: **tulsiprajnarj@gmail.com**
+91-9887111345

Tulsī Prajñā
(A UGC-CARE Listed Quarterly Research Journal of JVBI)

CONTENTS

Āgama 01
Ācārya Mahāprajña

Articles
बुद्ध के अव्याकृत प्रश्नों के उत्तर महावीर के द्वारा 08
प्रो. धर्मचन्द जैन

जैनदर्शन में सत्ता का स्वरूप (पंचाध्यायी के विशेष परिप्रेक्ष्य में) 17
प्रो. वीरसागर जैन

Sustainable Development as Reflected in the Shrimad Bhagavad Gita 23
Dr. Santosh Kumar Behera

गीता में प्रतिपादित ज्ञान-कर्म-भक्तियोग : समन्वय दृष्टि 32
डॉ. दीपिका विजयवर्गीय

महात्मा गांधी की पर्यावरणीय दृष्टिः एक अध्ययन 41
डॉ. विकास यादव

Influence of Prekśā Meditation and Yogic Lifestyle on Weight,
BMI and Triglycerides of Hyepertensive Patients:
A Randomized Controlled Trial 50
Dr. Iqbal Khan Goury
Dr. Yuvraj Singh Khangarot

Jaina Concept of Self-Restraint and The Economics of Minimalism 65
K K Naulakha

बप्पभट्टि और उनका तारायणो 79
गणेश तिवारी

Tulsī Prajñā
49 (193)
Jan-March, 2022
ISSN : 0974-8857

बुद्ध के अव्याकृत प्रश्नों के उत्तर महावीर के द्वारा

प्रो. धर्मचन्द जैन*

सारांशिका

लोक की शाश्वतता-अशाश्वतता, सान्तता, अनन्तता जीव एवं शरीर की भिन्नता-अभिन्नता, निर्वाण के पश्चात् जीव की सत्ता-असत्ता आदि ऐसे प्रश्न हैं, जिनका उत्तर दिया जाना सरल नहीं है। किसी अपेक्षा विशेष से ही इनके उत्तर दिए जा सकते हैं। गौतम बुद्ध इन प्रश्नों का उत्तर नहीं देकर मौन धारण कर लेते हैं, उन्हें इनका उत्तर देने पर शाश्वतवाद, अशाश्वतवाद, उच्छेदवाद आदि के चक्रव्यूह में फंसने की आशंका रही, अतः उन्हें अव्याकृत कहा गया; किंतु तीर्थंकर महावीर इस प्रकार के प्रश्नों के व्याख्याप्रज्ञप्ति (भगवती) आदि सूत्रों में अलग-अलग स्थानों पर उत्तर प्रदान करते हुए ज्ञात होते हैं। प्रस्तुत आलेख में ऐसे प्रश्नों एवं उत्तरों की चर्चा की गई है।

मुख्य शब्द

अव्याकृत, ब्रह्मविहार, तथागत, उच्छेदवाद, सान्त-अनन्त, संसारसमापन्नक।

* **प्रो. धर्मचन्द जैन**, सेवानिवृत्त आचार्य, संस्कृत-विभाग एवं पूर्व अधिष्ठाता, कला, शिक्षा एवं समाज विज्ञान संकाय, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।

Tulsī Prajñā
49 (193)
Jan-March, 2022
ISSN : 0974-8857

जैनदर्शन में सत्ता का स्वरूप

(पंचाध्यायी के विशेष परिप्रेक्ष्य में)

प्रो. वीरसागर जैन*

सारांशिका

सत्ता मीमांसा के चिंतन में सभी भारतीय दर्शनों का विशेष योगदान रहा है। सभी दर्शनों में भी जैनदर्शन में इस विषय पर अत्यन्त गहराई से चिंतन किया गया है। अनेक ग्रंथों में सत्तामीमांसा का वर्णन प्राप्त होता है और सभी के द्वारा उनका मंथन भी किया गया है। प्रस्तुत आलेख में पंचाध्यायी को इस विषय के प्रतिपादन हेतु आधार बनाया जा रहा है। इस ग्रन्थ में आगम और अध्यात्म के अनेक विषयों का सुंदर रीति से निरूपण किया गया है। इस आलेख में पंचाध्यायी में से एक श्लोक को आधार बनाकर सत्/सत्ता को बड़े अच्छे ढ़ंग से समझाया जा रहा है तथा इस विषय को पुष्ट करने के लिये प्राचीन आचार्यों द्वारा प्रदत्त विषय को भी ग्रहण किया जा रहा है। सत्ता का वास्तविक अर्थ सभी को ग्रहण हो, ऐसा इस आलेख का उद्देश्य है।

मुख्य शब्द

सत्तामीमांसा, खंडन-मंडन, स्वसहाय, युतसिद्ध, अहेतुक, निरपेक्ष, अनादिनिधन।

* **प्रो. वीरसागर जैन**, प्रोफेसर, जैन दर्शन विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दल्ली-110016

Tulsī Prajñā
49 (193)
Jan-March, 2022
ISSN : 0974-8857

Sustainable Development as Reflected in the Shrimad Bhagavad Gita

Dr. Santosh Kumar Behera*

Abstract

The revered book Shrimad Bhagavad Gita is a well-known Indian spiritual scripture and philosophical text which is a true guide for all human beings forever and its teachings are universal. Human beings and the environment are two sides of the same coin. One cannot live without the other. Natural resources are gifted by nature to humans for their survival. It is the fundamental duty of every citizen to protect, preserve, and defend our nature firmly. Excessive use of natural resources by human beings leads to harm to the environment. Thus, maintaining steadiness and harmonious relationships among the individual, society and nature is the basic requirement for us. Sustainability is a model for thinking about the future in which environmental, social and economic considerations are stable. For example, a wealthy society rests on a healthy environment to offer food and resources, pure drinking water and fresh air for its inhabitants. If we are not sustainable, then agriculture, fisheries, mining and energy are leading to exclusive environmental loss and degradation, over exploitation, pollution and climate change, etc. Their direct impacts and consequences are reflected in the natural world and on human beings.This paper explores the description of the highest knowledge and wisdom in Gita through which we are able to maintain equilibrium in our mind and senses. By obtaining and pursuing the teachings of Gita will be very much beneficial to keep a balance between individual, society and nature. It leads to sustainable development.

Key Words

Nature, Society, Man, Mind, Action, Stability, Development, Sustainable Development, Bhagavad Gita, Environment.

* **Dr. Santosh Kumar Behera,** Associate Professor, Department of Education, Kazi Nazrul University, West Bengal

गीता में प्रतिपादित ज्ञान-कर्म-भक्तियोग : समन्वय दृष्टि

Tulsī Prajñā
49 (193)
Jan-March, 2022
ISSN : 0974-8857

डॉ. दीपिका विजयवर्गीय*

सारांशिका

भारतीय वैदिक परम्परा में वेद, उपनिषदों की तरह ही भगवद्गीता का अत्यधिक सम्मानपूर्ण स्थान है। भारतीय संस्कृति में धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष, ये चार पुरुषार्थ माने गये हैं। इनमें चरम पुरुषार्थ मोक्ष (सर्वदुःखनिवृत्ति, परमानन्द-प्राप्ति या परमात्म-साक्षात्कार आदि) माना गया है, जिसकी प्राप्ति के लिए विशेष साधना करनी पड़ती है। वह साधना तीन प्रकार की मानी गई है– 1. ज्ञान 2. कर्म 3. भक्ति (उपासना)।

भगवद्गीता में भी इन तीन साधना-मार्गों का पृथक्-पृथक् निरूपण प्राप्त है। प्रत्येक मार्ग का साधक इन तीन साधना-मार्गों में से अपनी रुचि-क्षमता के अनुरूप किसी एक को अपना कर अपना आत्मकल्याण व मोक्ष प्राप्त कर सकता है। ये तीनों मार्ग स्वतन्त्र हैं, परस्पर-विरोधी नहीं हैं, यद्यपि प्रत्येक की दूसरे से अपनी विशेषता, भिन्नता है। इन्हें समन्वयात्मक दृष्टि से समझना-अपनाना अपेक्षित है। गीता में इस समन्वयात्मक दृष्टि के साथ इनका पृथक्-पृथक् निरूपण किया गया है।

गीता में संकेतित समन्वय-दृष्टि पर प्रकाश डालना प्रस्तुत शोधालेख का उद्देश्य है।

मुख्य शब्द

अनासक्त योग, ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, निष्काम कर्मयोग, गीता का प्रतिपाद्य, गीता-दर्शन।

* **डॉ. दीपिका विजयवर्गीय**, सह-आचार्य, हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

महात्मा गांधी की पर्यावरणीय दृष्टि: एक अध्ययन

Tulsī Prajñā
49 (193)
Jan-March, 2022
ISSN : 0974-8857

डॉ. विकास यादव*

सारांशिका

पर्यावरण पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व का आधार है, इसके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। गांधी का पर्यावरणशास्त्र भारत और विश्व के लिए उनके इस समग्र दृष्टिकोण के अनुरूप है कि मनुष्य का अस्तित्व बने रहने के लिए जो अत्यंत आवश्यक है वही प्रकृति से मांगा जाए। गांधी के जीवन दर्शन का अवलोकन करें तो स्पष्ट होता है कि उनके अर्थव्यवस्था और विकास से सम्बन्धित विचार पर्यावरणीय मानकों से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। गांधी के पर्यावरण प्रकृति सम्बन्धी विचार ऊपरी तौर पर सहज एवं सरल प्रतीत होते हों; परंतु उनमें विकास एवं पर्यावरण, गांव और शहर जैसे कई विमर्श अन्तर्भूत हैं। गांधीजी चाहते थे कि आधुनिक तकनीक मानव केंद्रित, प्रकृति संगत बने, प्रकृति के साथ उसका विरोधाभास न हो और वह मनुष्य की सृजनशीलता के अनुरूप हो। आज पाश्चात्य देश भी गांधीयन अवधारणा का अनुसरण कर रहे हैं, आवश्यकता है कि हम भी गांधी द्वारा प्रतिपादित पर्यावरण विषयक मार्ग पर चलें। उनका प्रसिद्ध वक्तव्य ''धरती के पास सभी की जरूरतों को पूरा करने लिए पर्याप्त संसाधन है; किंतु किसी के लालच के लिए नहीं'' समकालीन पर्यावरणीय आंदोलनों के लिए नारा बन गया। गांधी के विचार शाश्वत हैं। आज कोविड-19 का भयावह दौर हम सभी झेल रहे हैं उसके मूल में भी विकास की उपभोक्तावादी सोच ही प्रमुख है, जिसके प्रति गांधीजी ने हमें बहुत पहले ही चेता दिया था। आज आवश्यकता है जैन दर्शन के संयमित जीवन-शैली, अहिंसा, अपरिग्रह सिद्धांतों तथा गांधीयन पर्यावरण दृष्टि का अनुसरण करने की ताकि इस पृथ्वी को कोरोना (कोविड-19) जैसी महामारी से सुरक्षित रखा जा सके। प्रस्तुत शोध पत्र में महात्मा गांधी की पर्यावरणीय दृष्टि विषय पर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इस शोध पत्र का उद्देश्य है कि प्रकृति को बिना नुकसान पहुंचाए, उसका उपयोग कैसे करें, यह हम गांधी से सीख सकते हैं।

मुख्य शब्द

जैनदर्शन, गांधी, अहिंसक, विकेंद्रीकरण, स्वच्छता, औद्योगीकरण, आर्थिक समानता, प्राकृतिक संसाधन।

* **डॉ. विकास यादव**, सहायक आचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय, चिमनपुरा, जयपुर-303103 (राज.)

Tulsī Prajñā
49 (193)
Jan-March, 2022
ISSN : 0974-8857

Influence of Prekśā Meditation and Yogic Lifestyle on Weight, BMI and Triglycerides of Hyepertensive Patients: A Randomized Controlled Trial

Dr. Iqbal Khan Goury*

Dr. Yuvraj Singh Khangarot**

Abstract

Background : In India, more than 135 million individuals were affected by obesity. According to the ICMR-INDIAB study 2015, the prevalence rate of obesity and central obesity varies from 11.8% to 31.3% and 16.9%–36.3% respectively. The prevalence of overweight and obesity is increasing worldwide and they are associated with elevated blood pressure. **Aim:** Aim of the present study is to evaluate the effect of four months *Prekśā Meditation (PM)* and Yogic Lifestyle practice on Weight, Body Mass Index (BMI) and Triglycerides (TG) correlation in hypertensive patients. **Materials and Methods:** The present randomized study was conducted to determine the effect of Prekśā Meditation and Yogic Lifestyle practice on 30 participants (age 49.77±7.17) (Experimental Group/EG) whereas the results were compared with 30 subject of Control Group (CG). **Results:** *Prekśā Meditation* and *Yogic* Lifestyle causes decreased in weight Mean ± SD (from 75.79 ± 9.36 to 67.56 ± 8.54 Kg), BMI Mean ± SD (from 28.27 ± 2.49 to 26.08 ± 2.24 Kg/M2) and Triglycerides Mean ± SD (from 177.56 ± 55.82 to 134.97 ± 48.58 mg/dl) in participants of Experimental Group. **Conclusion:** This study concludes that PM and Yogic Lifestyle has potential to control Weight, BMI and Triglycerides without taking any medication in hypertensive patients.

Key Words

Weight, BMI, Triglycerides, Yogic Lifestyle, *Prekśā Meditation*, Hypertension

* **Dr. Iqbal Khan Goury,** Research Scholar, Department of Yoga and SOL, Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun - 341306 (Raj.)

** **Dr. Yuvraj Singh Khangarot,** Associate Professor, Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun - 341306 (Raj.)

Jaina Concept of Self-Restraint and The Economics of Minimalism

Tulsī Prajñā
49 (193)
Jan-March, 2022
ISSN : 0974-8857

K K Naulakha*

Abstract

Self-restraint refers to remaining completely equanimous – avoiding both attachment and aversion. A very popular dictum of Anuvrata movement says SanyamahKhaluJeevanam that broadly means that life itself should comprise of self–restraint. It also shows us the way to a sustainable future.This points to the doctrine of minimalism where self-control is taken as a tool for utter satisfaction in life. Minimalism is the style that emphasizes extreme simplicity in order to destress and also save money. When one lives a minimalist lifestyle, one strives to only use things that serve minimum wants. Self - denial is about living simply and having only what is needed to go about in daily life. The concept of relative economics lays emphasis on self-restraint. No mental peace is ever attained sans containment.

Key Words

Minimalism, *Aparigrana*, *Aṇuvrata*, Desire, *Ahimsā*.

* **K K Naulakha,** C.A., Research Scholar, Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun - 341306 (Raj.)

बप्पभट्टि और उनका तारायणो

Tulsī Prajñā
49 (193)
Jan-March, 2022
ISSN : 0974-8857

गणेश तिवारी*

सारांशिका

अनेक उपाधि स्वरूप नामों से विभूषित श्वेताम्बर सम्प्रदाय के जैन साधु आचार्य बप्पभट्टि अपने काल के बहुप्रतिष्ठित विद्वान् रहे हैं। लगभग एक शतक तक अपने ज्ञान-विज्ञान के माध्यम से जैन धर्म को पोषित करने वाले साधुओं में इनका नाम उल्लिखित है। इन्होंने अपने जीवन काल में अनेक रचनायें कीं। ऐतिहासिक ग्रन्थ 'प्रबन्धकोश और प्रभावकचरित' के अनुसार बप्पभट्टि ने 52 प्रबन्धों की रचना की थी। ये प्रबन्ध वर्तमान में उपलब्ध नहीं हैं। मध्यकाल में बप्पभट्टि की प्रसिद्धि उनकी तारायणो नामक प्राकृत मुक्तक काव्य के कारण अधिक हुई, जिसका संकलन आचार्य शंकुक ने किया। यह '**तारायणो**' ग्रन्थ वर्तमान में उपलब्ध है। जिस पर लघुशोधप्रबन्ध के रूप में सयुक्तिक संस्कृतच्छाया मेरे द्वारा की गई है। प्रस्तुत शोधपत्र में बप्पभट्टि के जीवन का बृहद् वर्णन करते हुए उनके ग्रन्थ तारायणो का परिचय प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द

बप्पभट्टि, तारायणो, प्रबन्धकोश, प्रभावकचरित, जैनधर्म, श्वेताम्बर सम्प्रदाय, प्राकृत, साधु, वाक्पतिराज, प्रबन्धकवि, श्रीवर्द्धमान, महावीर।

* **गणेश तिवारी**, शोधार्थी, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

Tulsī Prajñā Research Journal (TPRJ)

Guideline for Writers

1. It is policy decision for TPRJ that editors reserve the right to make final alterations in the text, on linguistic and stylish grounds, so that entry conforms to the uniform standard required for the journal.
2. Only Original, Authentic, Useful, Unpublished articles/papers will be accepted. The article once published in TPRJ cannot be published elsewhere without permission means the Copy right of the article published in the TPRJ shall remain vested with the journal.
3. Two Type script copies of the Manuscript along with Soft copy (Word File) in CD or email has to be submitted on appropriate addresses.
4. Writers are expected to provide short resume including contact details: postal address, email ID and Contact Numbers. (Format is provided on previous page)
5. The paper can be sent to authors again for upgrading it on basis of comments from experts.
6. The following are instructions for preparing the script:
   - Format of Article: Abstract (not more than 200 words), Key Words, Introduction, Problem, Research Methodology if any, Main Content, Research Design if any, Findings, Conclusion, Reference, Bibliography.
   - Font Type: Times New Roman /Krutidev010 respectively for English/Hindi.
   - Font Size: English 14/12/10 respectively for Heading/Main body/Reference. Hindi 16/14/12 respectively for Heading/ Main body/Reference.
   - Spacing : One and half for lines and double for Paragraph
   - Words: 4000-6000 words i.e. 10-15 Typed A4 Size Papers
   - Reference Type: MLA (8th edition)

     Link up for more help: http://www.easybib.com/guides/citation-guides/mla-8/ for examples: for journals and books respectively

     Kincaid, Jamaica. "In History." Callaloo, vol. 24, no. 2, Spring 2001, pp. 620-26.

     Jacobs, Alan. The Pleasures of Reading in an Age of Distraction. Oxford UP, 2011.
   - Reference Style : End note
   - Alignment: Justify
   - Quotation: verbatim et literatim (exact) with original: three dots to indicate ellipsis: in double inverted commas.
   - For the Manuscript prepared in English, The Words and /or citations from Sanskrit or any language other than English have to be in Roman Script, fully italicize and with standard diacritical marks.

RAJ HIN 28340/75

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN
PUBLICATION LIST

SL	Publication	Writer/Editor	Price
BOOKS			
01.	जैन-प्रबोधन : जैन दृष्टि	प्रो. बच्छराज दूगड़	140
02.	पूज्यपादेन आचार्यमहाप्रज्ञेन प्रणीता जैनन्यायपंचाशती (न्यायप्रकाशिकाव्याख्यायुता)	पं. विश्वनाथ मिश्र	100
03.	प्राकृत भाषा प्रबोधिनी	डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा	250
04.	जैनधर्मदर्शन का ऐतिहासिक विकासक्रम	डॉ. सागरमल जैन	700
05.	आचार्य महाप्रज्ञ का अवदान	प्रो. जिनेन्द्र जैन, प्रो. बी.एल. जैन	450
06.	आचार्य महाप्रज्ञ का हिन्दी साहित्य का अवदान	प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी	300
07.	जैन आगमों का सामान्य ज्ञान (प्रथम एवं द्वितीय भाग)	डॉ. महावीर राज गेलड़ा	250
08.	अपभ्रंश साहित्य का इतिहास	प्रो. प्रेम सुमन जैन	950
09.	Bhagavati Aaradhana	Dr. Dalpat Singh Baya	1995
10.	Teaching English : Trends and Chaalenges	Dr. Sanjay Goyal	300
11.	Anekanta : Philosophy and Practice	Prof. Anil Dhar	250
12.	Studies in Jaina Agamas	Prof. Dayanand Bhargav	550
13.	Various Dimensions of Social Culture	Prof. Damodar Shastri, Dr. Bijendra Pradhan, Dr. Hemlata Joshi	350
14.	Jain View of Reality: A Hermeneutic Interpretation	Dr. Samani Rohini Prajna	450
15.	Corporate Sector and Value Orientation	Dr. Jugal Kishor Dadhich	170
16.	Jain Philosophy : A Scientific Approach to Reality	Ed. Prof. Samani Chaitanya Prajna, Narayan Lal Kachhara, Narendra Bhandari, Kaushala Prasad Mishra	150
ENCYCLOPEDIA			
01.	जैन पारिभाषिक शब्दकोश	मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा	995
02.	जैन न्याय पारिभाषिक कोश	प्रो. दामोदर शास्त्री	500
03.	दृष्टांत कोश	प्रो. दामोदर शास्त्री	375
04.	Jain Paribhasika Sabdakosa	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrutavibha	1125
05.	Bibliography of Jaina Literature, Vol. I	Dr. Samani Aagam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya, Dr. Vandana Mehata	1200
06.	Bibliography of Jaina Literature, Vol. II	Dr. Samani Aagam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya, Dr. Vandana Mehata	1200
MONOGRAPH SERIES			
01.	Introduction to Jainism	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha	125
02.	Jain Doctrine of Reality	Dr. Samani Shreyas Prajna, Dr. Samani Amal Prajna	125
03.	Jain Doctrine of Knowledge	Dr. Sadhvi Chaitanya Prabha	125
04.	Jain Doctrine of Karma	Prof. Samani Riju Prajna, Sarika Surana	125
05.	Jain Doctrine of Anekant	Dr. Samani Shashi Prajna	125
06.	Jain Doctrine of Naya	Prof. Anekant Kuamr Jain	125
07.	Jain Doctrine of Nine Tattvas	Prof. Pradyuman Singh Shah	125
08.	Jain Doctrine of Six Essentials	Dr. Arihant Kumar Jain	125
09.	Jain Doctrine of Aparigraha	Prof. Sushma Singhvi, Dr. Rudi Jansma	125
10.	Jain Doctrine of Nyaya	Prof. Samani Riju Prajna, Dr. Samani Shreyas Prajna	125
11.	Jain Doctrine of Dreams	Dr. Sadhvi Rajul Prabha	125
12.	Jainism : A Living Realism	Prof. S.R. Vyas	125
13.	An Introduction to Preksha Meditation	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha	125

सम्पादक; प्रकाशक - जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं; मुद्रक - तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर (राजस्थान)